(205) "कुट छेदने" (X-चुरादिः-1699. सक. सेट्. आत्म.)

आकुस्मीयः। '—अवक्षेपणे' इति केचित्। [अ]

| | |
|---|---|
| कोटकः-टिका, | चुकोटयिषकः-षिका[1]; |
| कोटयिता-त्री, | चुकोटयिषिता-त्री; |
| [2]कोटयमानः, | चुकोटयिषमाणः, |
| कोटयिष्यमाणः, | चुकोटयिषिष्यमाणः; |
| कोट्-कोटौ-कोटः; | — |
| कोटितः-तम्, | चुकोटयिषितः-तवान्; |
| कोटः, | चुकोटयिषुः; |
| कोटयितव्यम्, | चुकोटयिषितव्यम्; |
| [3]कोटनीयम्, | चुकोटयिषणीयम्; |
| कोट्यम्, | चुकोटयिष्यम्; |
| ईषत्कोटः-दुष्कोटः-सुकोटः; | — |
| कोट्यमानः, | चुकोटयिष्यमाणः; |
| कोटः, | चुकोटयिषः; |
| कोटयितुम्, | चुकोटयिषितुम्; |
| कोटना, | चुकोटयिषा; |
| कोटनम्, | चुकोटयिषणम्; |
| कोटयित्वा, | चुकोटयिषित्वा; |
| प्रकोट्य, | प्रचुकोटयिष्य; |
| कोटम् २, कोटयित्वा २, | चुकोटयिषम् २; चुकोटयिषित्वा २. |

1. धातोः अनेकाच्त्वात् 'धातोरेकाच—' (3-1-22) इति यङ् न।
2. 'आ कुस्मादात्मनेपदिनः' (गणसूत्रम् चुरादौ) इति वचनात् शानजेव।
3. 'णेरनिटि' (6-4-51) इति णिलोपः।

[अ] "चुट छेदने" इत्यस्य पाठान्तरमिदम्।